नेशनल डेमोक्रेटिक टीचर्स फ्रंट (NDTF)

राष्ट्रवादी शिक्षक संगठन

एन.डी.टी.एफ. दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों का राष्ट्रवादी संगठन है। इसकी स्थापना 1960 के दशक में हुई। सर्वश्री देवेन्द्र स्वरूप , डॉ. एम.एम. शंखधर, डॉ. के.के. मित्तल, डॉ. के.डी. वाजपेयी, डॉ. चन्द्रकान्त, ओम प्रकाश कोहली और कुछ अन्य शिक्षक जब–तब मिलते रहते थे और शिक्षकों के राष्ट्रवादी संगठन की आवश्यकता के बार में चर्चा किया करते थे। ऐसी चर्चा में से ही एन.डी.टी.एफ. का आविर्भाव हुआ।

उद्देश्य

- शिक्षा में, विशेष रूप से उच्च शिक्षा में सुधार,
- बौद्धिक वायुमण्डल का निर्माण,
- व्यावसायिक प्रतिबद्धता के लिए प्रयास,
- राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर मुक्त चर्चा
- विश्वविद्यालय समुदाय मकें राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहन,
- शिक्षकों के सामाजिक और आर्थिक हितों के लिए प्रयास।

अध्यक्ष

स्थापाना काल से अब तक एन.डी.टी.एफ. के निम्नलिखित अध्यक्ष रहे हैं:

1. श्री ओम प्रकाश कोहली
2. श्री इन्द्र मोहन कपाही
3. श्री बी.बी. तायल
4. श्री एन.के. कक्कड़
5. श्री अवनिजेश अवस्थी
6. श्री राज कुमार भाटिया
7. श्री राकेश कुमार पाण्डेय
8. श्री अजय भागी

दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (DUTA), एकेडेमिक काउंसिल (A.C.) और एक्जीक्यूटिव काउंसिल (E.C.) के चुनाव में शिक्षकों का प्रतिनिधित्व

1969 में डूटा के चुनाव में एनडीटीएफ ने अध्यक्ष पद के उम्मीदवार श्री रूद्रदत्त का समर्थन किया। श्री रूद्रदत्त विजयी रहे और उन्होंने वामपंथी उम्मीदवाद को पराजित किया।
श्री ओम प्रकाश कोहली 1973 से 1979 तक शिक्षक संघ के अध्यक्ष रहे। (1975 से 77 सत्र में आपात काल के कारण डूटा के चुनाव नहीं हुए थे। इस पूरी अवधि श्री कोहली मीसा के अन्तर्गत बन्दी थे।)
डॉ. एन.के.कक्कड़ डूटा के अध्यक्ष पर के लिए चुने गए।
डॉ. एस आर ओबराय डूटा के अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित हुए।

एनडीटीएफ A.C. और E.C. के चुनावों में लगातार भाग लेता आया है। इन निकायों में विजयी नामों में कुछ है : ओम प्रकाश कोहली, इन्द्र मोहन कपाही, डॉ. एन.के.कक्कड़, डॉ. के.पी. चिन्दा, राजवीर शर्मा, गुरमोहिन्दर सिंह, बी.एस.नेगी, अजय भागी , वीरेन्द्र भारद्वाज और मोहन लाल।

शिक्षकों के हितों के लिए सतत् प्रयत्नशील

शिक्षकों के वेतनमान , पदोन्नति, कार्यदिशाएं, सेवा–सुरक्षा जैसे मुद्दों के लिए एनडीटीएफ निरंतर संघर्ष करता आया है। इन मुद्दों पर शिक्षक संघ द्वारा किए गए प्रयासों में एनडीटीएफ की प्रशंसनीय भूमिका रही है। हम नीचे कुछ ऐसे मुद्दों का जिक्र कर रहे हैं, जिनके लिए किए गए संघर्ष में एनडीटीएफ की उल्लेखनीय भूमिका रही है:

- विश्वविद्यालय के संगठनात्मक ढांचे का लोकतांत्रिकरण,
- कॉलेजों में स्टाफ काउंसलिंग का प्रावधान,
- विभागाध्यक्ष के पद का रोटेशन,
- वेतनमान और उससे जुड़े मुद्दों के लिए संघर्ष,
- पदोन्नति की तर्कसंगत योजना और उससे जुड़े मुद्दे,
- कॉलेजों में रीडरशिप और प्रोफेसरशिप,

- विश्वविद्यालय के निकायों – ए.सी. और ई.सी. में शिक्षकों की निर्वाचित सीटों की संख्या में वृद्धि,
- शिक्षकों के लिए मैडीकल स्कीम,
- हाउस बिल्डिंग एडवांस,
- लाइब्रेरियन और डायरेक्टर ऑफ फिजिकल ऐजुकेशन को शिक्षक का पद दिलाना,
- तदर्थ शिक्षकों का स्थायीकरण।

<u>एनडीटीएफ के संगठनात्मक ढॉचे में सुधार</u>

दिल्ली विश्वविद्यालय और उसके कॉलेजों का विस्तार होने के कारण एनडीटीएफ कके संगठनात्मक ढॉचे मं सुधार की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। हाल ही में एनडीटीएफ के पुनर्गठन का प्रयास किया गया है। प्रत्येक कॉलेज/विभाग/संकाय को प्राथमिक स्तर पर संगठनात्मक इकाई बनाने का निर्णय लिया गया है। जोनल स्तर पर भी संगठन की इकाई खड़ी करने का निर्णय लिया गया है। एनडीटीएफ की गतिविधियों को चतुष्कोणीय स्वरूप दिया गया है।

<u>ये चार **Functional Verticles** हैं :</u>

- संगठनात्मक गतिविधियॉ
- विश्वविद्यालय विषयक गतिविधियॉ
- मीडिया सम्बन्धित गतिविधियॉ
- वैचारिक गतिविधियॉ

<u>सकारात्मक दृष्टिकोण</u>

एनडीटीएफ शिक्षकों के हितों के मुद्दों पर संघर्ष करते हुए बराबर यह सावधानी बरतता है कि विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण क्षत–विक्षतन हो। आए दिन की हड़ताल और परीक्षा बहिष्कार जैसे कदमों से विश्वविद्यालय का अकादमिक वातवरण कमजोर होता है। आन्दोलन के

लिए आन्दोलन में और दिखावे की शूरवीरता में एनडीटीएफ का विश्वास नहीं है। वह परिणामकारी रचनात्मक एप्रोच में विश्वास रखता है।

ऋतु कोहली
एसोसिएट प्रोफेसर
महाराजा अग्रसेन कॉलेज